ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-2, No.-2, **PP-63-64**,YEAR-2015

श्रीमद्भगवद्गीत और बांह्मी स्थिति

❑ **डॉ0 कृष्ण चन्द्र चौरसिया**

सारांश– *भारतीय मनीषियों के लिए मानव जीवन महत्त्वपूर्ण थी और वे मावन जीवन को व्यर्थ नष्ट कर देना उचित नहीं समझते थे उनकी दृष्टि सत्य के अनुसंधान में लगी रहती थी । सत्य क्या है ? इसको जानने के लिए ऋषि–मुनि निरन्तर उद्योगशील रहते थे। भारतीय सांस्कृतिक परम्परा ऋषियों–मुनियों ने साक्षात्कार स्वरूप जो प्राप्त किया वही दर्शन कहलाया । दर्शन मनुष्य के जीवन रूपी प्रयोगशाला में अनुसन्धान किया हुआ सत्य है । यह अनुसन्धान उपनिषदों के आविर्भावकाल तक आते–2 आत्मदर्शन हो गया । यहाँ ध्यातव्य है कि सर्वप्रथम पुरुषार्थ अमृतत्व (धर्म, अर्थ, काग और मोक्ष) की प्राप्ति ही मानव–जीवन का एक मात्र लक्ष्य था किन्तु अवान्तरकाल में रुचि, शक्ति, अभ्यास आदि के भेद से तत्त्व के विषय में ज्यों–2 विचार होते गये त्यों–2 दर्शन के भी भेद प्रभेद होते गये। परिणामतः यह वह समय आ गया जब भेद के अन्तर्गत अवान्तर भेद होने से अधिकाधिक दाशनिक सम्प्रदाय देश में उत्पन्न हो गये । जिसे चार्वाक, लोकायत, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, जैन, बौद्ध इत्यादि नामों से जाना गया ।*

श्रीमद्भगवमीता महाभारतान्तर्गत भीष्मपर्व के 23 वें अध्याय से 40 वें अध्याय पर्यन्त है; जिसमें 745 श्लोक है । इनमें 620 श्लोक भगवान श्रीकृष्ण, 67 श्लोक संजय, 57 श्लोक अर्जुन तथा 01 श्लोक धृतराष्ट्र के द्वारा कहा गया है।

षट्शतानि सविंशानि श्लोकानां प्राह केशवः।
अर्जुनः सप्तपञ्चाशत् सप्तषष्टि तु संजयः।।
धृतराष्ट्र श्लोकमेवं गीताया मानमुच्यते ।

श्रीमद्भगवमीता में वेद, वेदांग, पुराण, धर्मशास्त्र का सार समाहित है[3], जिसमें तथ्य यह है कि महाभारत युद्ध के भीषण परिणामों की कल्पना कर कुरुक्षेत्र युद्धस्थल में अर्जुन का रोम कॉपने लगा । हाथ से गांडीव धनुष गिरा जा रहा था । त्वचा भी बहुत जलने लगी। मन भ्रमित–सा होने लगा..... ऐसी अवस्था पाकर अर्जुन युद्ध से विमुख होने लगा[4] तो लीलाधारी भगवान श्रीकृष्ण ने उसे अपने ह्रदय की दुर्बलता त्याग कर युद्ध में डँटे रहने को कहा । इसके माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने मानव जीवन के वास्तविक कर्त्तव्य का स्मरण कराया । इसके माध्यम से भारत को कर्म, उपासना, भक्ति और ज्ञान रुपी मंजुल संगम में स्नान कराया । भगवान श्री कृष्ण बोले, हे अर्जुन! तू न शोक करने योग्य मनुष्यों के लिए शोक करता है और पण्डितों की वाणी बोलता है, परन्तु जिसके प्राण चले गयें, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गये है उनके लिए भी पण्डित जन शोक नहीं करते।[5] ..... अर्जुन के अहंकार का पूर्णतः नाश हो गया तो वह शिष्यत्व रूप में भगवान श्रीकृष्ण के शरणागत को प्राप्त हुए। भगवान श्री कृष्ण ने भी अर्जुन के घोर अज्ञानान्धकार को हटाने के लिए ज्ञान, कर्म और उपासना के आधार से ब्राह्मीस्थिति पर्यन्त को समझाया ; जो उपनिषदों का ही नहीं शास्त्रों का भी सार है–

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतम्।।

अर्थ च–

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।।

बुद्धि में शान्ति, गम्भीरता और विशालता का आना ही ज्ञान का उदय होना है। ज्ञानोदय होने पर साधक को पता चलता है कि मै सबके भीतर स्थित हूँ। इसी अवस्था में साधक अनुभव करता है कि सब कुछ

श्री भगवान महावीर पी. जी. कालेज पावानगर, फाजिलनगर, कुशीनगर, (उ0प्र0) भारत

मुझमें है और मै भी प्राणिमात्र में हूँ। मुझमें और ईश्वर में कुछ भी भेद नहीं है।भगवान श्रीकृष्ण ने अपना विश्वरूप (विराटरूप) का दर्शन अर्जुन को दिखाया। यहॉ विराटरूप का तात्पर्य है कि सभी में एक अनन्त भगवान का निवास और उनकी अनन्त शक्ति के योग से सब कुछ हो रहा है–ऐसा प्रतीत होना है। जैसा कि ईशावास्योपनिषद् कहता है– ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्। श्रीमद्भेगवतपुराण,द्वितीय स्कन्ध, अध्याय–01 भी विश्वमूर्ति के सम्बन्ध में बतलाता है– इस विराट पुरुष की नाडियॉ नदिया है। वृक्ष रोम है। परम प्रबल वायु श्वास है। काल उनकी चाल है और गुणों का चक्कर लगाते रहना ही उनका कर्म है। बादल उनका केश है। सन्ध्या उन अनन्त का वस्त्र है। मूल प्रकृति ही उनका हृदय है और उनका मन चन्द्रमा है। महत्तत्त्व को उनका चित्त कहते है और रुद्र उनके अहंकार है। घोडे, खच्चर, ऊँट, और हाथी उनके नस है। वन में रहने वाले सारे मृग और पशु उनके कटिप्रदेश में स्थित है। सभी पक्षी उनके रचना कौशल है और स्वयम्भु मनु उनकी बुद्धि है। मनु के सन्तान मनुष्य उनके निवास स्थान है।गान्धर्व, विद्याधर, चरण और अप्सरा उनके स्वर है। दैत्य वीर्य है तो ब्राह्मणमुख, क्षत्रिय भुजा, वैश्य जंघा और शूद्र चरण है।द्रव्यमय यज्ञ ही उनके कर्म है.....। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण का यह विराट स्वरूप देखकर अर्जुन कहते है कि आप उग्ररूपधारी कौन है ?

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम।।

भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को अपना स्वरूप जब बतलाते है तो अर्जुन के मुख से निकल पडता है–

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धामं त्वया ततं विश्वमनन्तरूपम्।
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा ऋषियों–मुनियों ने साक्षात्कार स्वरूप जो प्राप्त किया वही दर्शन कहलाया। दर्शन मनुष्य के जीवन रूपी प्रयोगशाला में अनुसन्धान किया हुआ सत्य है । यह अनुसन्धान उपनिषदों के आविर्भावकाल तक आते–2 आत्मदर्शन हो गया।ऋषियों–मुनियों ने विराट पुरुषरूप की प्राप्ति तथाभोगरुप की प्रप्ति कृते दो मार्गो का अनुसंधान किया है– श्रेयमार्ग और प्रेयमार्ग । यहाँ श्रेयमार्ग मोक्षमार्ग का दिग्दर्शन कराती है और प्रेयमार्ग इष्टभोगो की प्राप्ति की ओर ले जाती है ।मुमुक्षु का मुख्य लक्ष्य अज्ञान का त्याग एवं तत्त्वज्ञान का अर्जन करना है– ब्रह्मविद्–ब्रह्मैव भवति ।तत्त्वतः यह जगत् ब्रह्म है और मै भी ब्रह्म हूँ (अहं ब्रह्मास्मि) तुम भी ब्रह्म हो(तत्त्वमसि)–ऐसा समझकर जो बहिर्मुखी इन्द्रियों की प्रवृत्तियों को रोक कर ब्रह्ममयरूप में ही रमण करता है, वही ब्राह्मी स्थिति है। अविद्या रूपी रात्रि में सांसारिक पुरुष जिसे कहतें है कि 'यह मै हूँ और यह मेरा है' उसे ब्रह्मविद् पुरुष ऐसा स्वीकार नहीं करते है–

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

भगवान श्रीकृष्ण के अनुसार जो पुरुष सभी भोग्य पदार्थो को छोड देता है। जो शरीर या शरीर के धर्मो के साथ ममत्व नहीं रखता,वह ब्रह्म के साथ तादात्म्यभाव स्थापित कर लेता है–

विहाय कामाय यः सर्वान् पुमॉश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहकांरः स शान्तिमधिगच्छति ।।

अर्थ च–

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।।

यहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने बतलाया कि साधक जब सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में एकीभाव स्थिति को प्राप्त कर लेता है तो वह काम, क्रोध, लोभ, मद, मात्सर्य, इर्ष्या रूपी जगत की आकांक्षा नहीं करता –

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ।।

*****